International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कहानी समीक्षा

'मूल्य'

डा0 ब्रिजिट जोसफ के

दीप्ति खण्डेलवाल हिन्दी की नव–कहानी लेखिकाओं में सुविख्यात हैं। युवा मन की गुत्थियाँ अनावृत करके विभिन्न सामाजिक समस्याओं की ओर इशारा करना उनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य है। उनके कहानी–संग्रह हैं–'कडवे सच' और 'धूप के एहसास'। उनकी कहानियों की एक प्रमुख विशेषता बदलते मूल्यों की तलाश है। इसके अलावा लेखिका अपनी कहानियों में नारी जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत करके उसकी मानसिक व्यथा को वाणी देती हैं ।

'मूल्य' दीप्ति खण्डेलवाल की एक उल्लेखनीय कहानी है । इसका मुख्य पात्र शंकर पंडित संस्कृत का अध्यापक है घर पर उसकी पत्नी और दो बच्चे–विजय और मीरा हैं। पंडित के दोनों बच्चे कालेज में पढ़ते हैं। परिवार सदस्यों की संख्या चार होते हुए भी ढाई सौ रुपये से घर को चलाना पंडित के लिए मुश्किल बात है। इसका मुख्य कारण यह है कि विजय और मीरा आधुनिक युग की सुविधाओं का इस्तेमाल करके जीना चाहते हैं। शंकर पंडित की दृष्टि में संस्कृत पढाना और

खादी पहनना उत्तम मूल्य है। लेकिन उसके बच्चों को यह स्वीकार्य नहीं। वे परंपरागत मूल्यों को कोई महत्ता नहीं देते। दूसरी ओर स्कूल में कोई

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संस्कृत पढ़ना नहीं चाहता। इसलिए संस्कृत के क्लासेज के बन्द हो जाने की संभावना है ।

विजय कालेज की स्टूडेंट्स यूनियन का प्रेसिडेंट है। विरोधी दल के नेता प्रकाश से संघर्ष होने पर विजय की मृत्यु हो जाती है। शवयात्रा में कालेज के विद्यार्थी शामिल हैं और वे विजय के अनुकूल जिन्दाबाद कह रहे हैं। उनके अनुसार विजय ने अपने मूल्यों के लिए जान दी है। लेकिन इनके चेहरे पर कोई दुःखभाव नहीं। विद्यार्थियों के बुलावे के बिना शंकर पंडित पुत्र की शवयात्रा में भाग लेता है। उसकी आंखो से आँसू का एक कण भी नहीं ढुलका। नयी पीढी के मूल्य उसे गूंगा और बहरा बनाते हैं। उसकी राय में विजय के दोस्त मूल्यों का जनाजा उठाते हैं ।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार मूल्यपरिवर्तन की दिशा अंकित करती है। लेखिका पिता–पुत्र संबन्ध विघटन की ओर इशारा करके पुरानी और नयी पीढ़ी के बदलते मुल्यबोध को व्यक्त करती है। शंकर पंडित अपने जमाने के मूल्यों को महत्व देता है जबकि विजय के

लिए वे मूल्य मर चुके हैं। शंकर पंडित ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेकर मातृभूमि के लिए अपना यौवन बिताया तो विजय अनैतिकता का मार्ग अपनाकर सहविद्यार्थी से झगडा करता है और अध्यापकों का अनादर भी करता है। विजय का अंहभाव उसके कथन से ही स्पष्ट है–'हम पढ़े या न पढ़े देट इज अवर बिजिनेस, नोट देअर्स पिता मानता है स्वदेश की मिट्टी का मूल्य उसने चुका दिया। इसलिए नये जमाने में भी वह खादी वस्त्र पहनना नहीं छोडता। विजय की दृष्टि में यह वैल्यूहीन काम है ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक अध्यापक की आय पर घर का गुजारा करना कठिन ही है। फिर भी शंकर पंडित नयी पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने से हिचकता नहीं लेखिका कहानी में यह व्यक्त करती हैं कि जब युवा पीढ़ी के आग्रहों की पूर्ति होती है तब वे उस क्षण पुरानी पीढी का अंगीकार करते हैं बाद में नहीं। इसलिए शांपू खरीदने पैसा मिलने पर मीरा पिता से कहती है–'थेंक्यू पिताजी। ओ थँक्यू वेरी वेरी मच। चलिए आप तो वैल्यूज को समझते हैं।'

आधुनिक युग में पढ़ाई का लक्ष्य नौकरी है। नयी पीढ़ी के अनुसार नौकरी प्राप्त करने के लिए संस्कृत पढ़ने को आवश्यकता नहीं। इसलिए उनको कालिदास और भवभूति अनजान की चीजे है। युवागण का मत है– जिस चीज का कोई यूज न हो उसका मूल्य ही क्या ?'पंडित के वेतन को बच्चे मूल्यवान समझते हैं जबकि पंडित का कोई वैल्यू नहीं है।

कालेज के विद्यार्थियों को आवश्यकताओं की पूर्ति करने में विजय होशियार है। इसलिए वे मानते हैं कि जीवन काल में विजय देश की जनता की सेवा करता था सच तो यह है कि प्रकाश के साथ उसका संबन्ध अच्छा नहीं था। लेखिका स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं कि नयी पीढ़ी की दृष्टि में स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल पंडित का व्यवहार वैल्युहीन है, बल्कि विजय का काम अधिक मूल्यवान है। पुराने मूल्यों में आस्था रखने पर ही नये मूल्यों को जीवन्तता मिल जाएगी। नयी पीढ़ी इसको स्वीकार नहीं करती। इसलिए शंकर पंडित पुत्र के शव की तुलना मृत मूल्यों से करता है।